University in News on 19 January 2022

i-NEXT PAGE 5

एलयू : जल्द बनेगा एक वर्षीय बीएड पाठ्यक्रम

नेशनल टीचर ऑफ काउंसिल एजुकेशन ने लखनऊ विश्वविद्यालय के डीन एजुकेशन की अध्यक्षता में बनाई है कमेटी

LUCKNOW (18 Jan): परास्नातक कक्षाओं में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिए अच्छी खबर है. सब कुछ ठीक रहा तो नेशनल टीचर आफ काउंसिल एजुकेशन (एनसीटीई) नए सत्र से एक वर्षीय बीएड पाठ्यक्रम शुरू कर सकती है. खास बात ये है कि एनसीटीई ने नई शिक्षा नीति के अनुसार इसका पाठ्यक्रम बनाने की जिम्मेदारी लखनऊ विश्वविद्यालय की डीन एजुकेशन प्रो.तृप्ता त्रिवेदी की अध्यक्षता में गठित कमेटी को दी है. कमेटी ने पाठ्यक्रम का स्ट्रक्चर तैयार कर लिया है. फरवरी के अंत तक पाठ्यक्रम बनाकर मंजूरी के लिए भेज दिया जाएगा.

फिर से तैयार हो रहा पाठ्यक्रम

वर्ष 2014 से पहले बीएड पाठ्यक्रम एक वर्ष का होता था. उसके बाद से दो वर्षीय पाठ्यक्रम लागू हो गया. अब नई शिक्षा नीति-2020 के अनुसार फिर से एक वर्षीय पाठ्यक्रम शुरू होगा. एनसीटीई की ओर से एक वर्षीय बीएड पाठ्यक्रम बनाने के लिए छह सदस्यीय कमेटी बनाई गई है. इसमें लखनऊ विश्वविद्यालय की डीन एजुकेशन प्रो. तृप्ता त्रिवेदी को चेयरपर्सन बनाया गया है. सदस्य के रूप में तमिलनाडु टीचर एजुकेशन यूनिवर्सिटी के प्रो. एस. मनी, जम्मू यूनिवर्सिटी की प्रो. रेनू खुराना, वनस्थली विद्यापीठ के प्रो. अजय खुराना, एमएसयू बड़ौदा की प्रो. छाया गोयल और एसवीपीजी गोरखपुर विवि के प्रो. बृजेश पांडेय शामिल हैं.

दो वर्षीय पाठ्यक्रम लागू हो गया. अब नई शिक्षा नीति-2020 के अनुसार फिर से एक वर्षीय पाठ्यक्रम शुरू होगा.

दो सेमेस्टर होंगे

एक वर्षीय पाठ्यक्रम दो सेमेस्टर पर आधारित होगा. प्रो. तृप्ता त्रिवेदी ने बताया कि नई शिक्षा नीति के अनुसार इसका स्ट्रक्चर तैयार हो गया है. स्कूली शिक्षा में बदलाव के आधार पर पाठ्यक्रम तैयार करने पर काम चल रहा है. इसके लिए सदस्यों के साथ आनलाइन मीटिंग में काफी चीजें स्पष्ट हो चुकी हैं. यह पाठ्यक्रम च्वाइस बेस क्रेडिट सिस्टम (सीबीसीएस) के तहत होगा.

AMAR UJALA MY CITY PAGE 5

लविवि में अंतरराष्ट्रीय ई-कॉन्फ्रेंस आज से

लखनऊ। लविवि में बुधवार से दो दिवसीय अंतरराष्ट्रीय ई-कॉन्फ्रेंस का आयोजन किया जा रहा है। विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस मॉलीक्यूलर जेनेटिक्स एंड इंफेक्शियस डिजीज (ओएनजीसी सेंटर फॉर एडवांस स्टडीज) व मॉलीक्यूलर एंड ह्यूमन जेनेटिक्स लेबोरेट्री, जूलॉजी विभाग द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित वेबिनार में 'रिसेंट ट्रेंड्स इन हेल्थ एंड डिजीजेज' विषय पर देश-विदेश के विशेषज्ञ चर्चा करेंगे। पहले दिन प्रो. आलोक धवन, प्रो. शुभा आर फड़के, फ्रांस के प्रो. नईम खान, यूएसए के डॉ. बिलाल हफीज व प्रो. बीबी अग्रवाल, प्रो. एमएम चतुर्वेदी, डॉ. गीता राय, प्रो. एमके दत्ता, डॉ. शैलेश श्रीवास्तव आदि वक्तव्य देंगे। वहीं 20 जनवरी को आस्ट्रेलिया के डॉ. मनीषा पांडेय, आयरलैंड की प्रो. शैरोन ग्लिन व भारत के प्रो. फरजाना अली मेंहदी, डॉ. एसके राठ आदि संबोधित करेंगे। (माई सिटी रिपोर्टर)

DAINIK JAGRAN PAGE 2

युवा मतदाता बोले

खुशी की बात है कि पहली बार विधानसभा चुनाव में वोट दूंगी। राजनीतिक दलों ने युवाओं को रिझाने के लिए उपहार देने की

घोषणा कर दी, लेकिन मैं इसके आधार पर वोट नहीं दे सकती। हमारी सबसे बड़ी जरूरत रोजगार है। भावी सरकार से अपेक्षा है कि रोजगार के पर्याप्त अवसर मुहैया कराए जाएं, ताकि पढ़कर निकलें तो खाली न बैठें। इसके अलावा स्टार्टअप की योजनाओं को भी बढ़ावा मिले।

– **वर्तिका तिवारी**, बीए अंतिम वर्ष, लविवि

लगभग सभी पार्टियों ने बड़े बड़े वादे किए हैं। उनमें विद्यार्थियों के लिए लैपटाप, स्मार्ट फोन, स्कूटी देने की भी घोषणा है, लेकिन मेरा

मानना है कि जो युवाओं के मुद्दे उठाए, वही सही है। वर्तमान में सभी युवाओं की एक मात्र मांग रोजगार है। क्योंकि रोजगार देने के वादे तो बहुत होते हैं, लेकिन हकीकत काफी दूर।

– **भास्कर कुमार गिरी**, बीएससी अंतिम वर्ष, लखनऊ विश्वविद्यालय

JAGRAN CITY PAGE I

अध्ययन लखनऊ विश्वविद्यालय के वन्यजीव विज्ञान संस्थान ने राजभवन की जैव विविधता पर किया शोध

दूर देश से आई तितली, 35 किस्में रंग-रंगीली

जागरण विशेष

अखिल सक्सेना ● लखनऊ

वैसे तो राजभवन की हरियाली और सुंदरता प्रदेशभर में प्रसिद्ध है। जिसने भी इसे देखा, सराहना करते नहीं थका। आपको जानकार आश्चर्य होगा कि राजभवन के अंदर 35 प्रजातियों की सुंदर तितलियों और 56 प्रजातियों के पक्षियों का बसेरा भी है। यही नहीं, परिसर में 96 परिवारों के वृक्षों और पौधों की कुल 256 प्रजातियां भी पाई जाती हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय के वन्यजीव विज्ञान संस्थान की ओर से राजभवन की जैव विविधता (बायो डायवर्सिटी) पर कराए गए एक साल के अध्ययन में यह आंकड़े सामने आए हैं। जल्द ही इसकी रिपोर्ट तैयार कर राजभवन को भेजी जाएगी।

लखनऊ विश्वविद्यालय के वन्यजीव विज्ञान संस्थान ने पूरे शहर का बायो डायवर्सिटी इंडेक्स बनाया था, जिसके बाद नवंबर 2020 में राज्यपाल ने राजभवन की जैव विविधता पर भी अध्ययन करने के लिए कहा था। संस्थान की कोआर्डिनेटर प्रो. अमिता कनौजिया और उनकी टीम में शामिल परियोजना अधिकारी आदेश कुमार, शोधार्थी रुचिरा निगम व ऐश्वर्या राय ने राजभवन जाकर इस पर अध्ययन किया था।

राजभवन की जैव विविधता का अध्ययन करते लवि के वन्यजीव विज्ञान संस्थान की शोधार्थी रुचिरा निगम, ऐश्वर्या राय व परियोजना अधिकारी आदेश कुमार ● सौजन्य : लविं

56 पक्षियों की तो पौधों की 256 प्रजातियां मौजूद

मकड़ियों की भी पांच प्रजातियां

रिपोर्ट के मुताबिक 256 प्रजातियों के पौधों के साथ-साथ यहां कामन गल, वंडर, कास्टर, पिकाक पैंसी, लाइम, कामन मारमोन, ब्लू पेंसी, एग्फलाई सहित 35 प्रजातियों की तितलियां पाई गईं। आर्थोपोड्स (कीट पतंगे) की 67, एनेलिड्स (केंचुआ आदि) और मोलस्क (घोंघा) की दो और मेंढक व सरीसृप की तीन-तीन प्रजातियां देखने को मिलीं। मकड़ियों की भी पांच प्रजातियां देखी गईं। अध्ययन के दौरान 12 परिवारों से संबंधित पक्षियों की 56 प्रजातियां भी पाई गईं।

तीनों मौसम में किया अध्ययन : प्रो. अमिता कनौजिया ने बताया कि राजभवन की जैव विविधता के लिए जाड़ा, गर्मी और बरसात तीनों मौसम में अध्ययन किया गया। पता चला कि यहां की जैव विविधता में संरक्षण की दृष्टि से काफी संभावनाएं हैं। यहां अकशेरुकी और कशेरुकियों की एक विशाल जैव विविधता को आश्रय मिलता है।